७७। । तर्गे गा नित्र हिंद हिंद हुन हुन स्वित । यह स्वार । यह स्वा

न्वायः भूरः व्यायः भूरः यः द्वारः सुवः स्वाया

विश्वेर्त्त्र्त्रम् स्विराधित्र स्वराधित्र स्वराधित्र स्वराधित्र स्विराधित्र स्वराधित्र स्वराधित स्वराधित स्वराधित स्वराधित स

२०० । तर्गेग नित्र हिंद हिंद होता स्वे मान्स स्व कंदर्स स इसी होता नित्र ।

स्त्रियः प्रदेश्यः स्त्रियः विद्याः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स् स्रायक्ष्यः स्त्रियः स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्त

वेशःश्चित्रशः प्रायाधार्यः स्वतः हिंद्रायः द्वा स्वर्णः स्वर्

वेद्रायदे में अन्य वुद्राय देश अञ्चन खूद त्वुय के हेद तवेष ववद में विना वर्षेत्रायायायीत्राम्याक्षेत्राम्याक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्रा ग्रदःस्वरूप्तरः केवः सेवेः नाशुदः नी दर्गेदशः देवः है साहे नविवः ह्युवः से निद्याः क्षुःतुर्वायित्रः यात्रवाद्यायात्रे यात्रवायायायेत्रः यादः स्टामी ह्याः त्रवायाः प्रमा यदे र्ह्ने हो दुर्भ कुर य विवा हुर य है हो दुर्भ वाश्वर दर सहय यदे या व देव क्रमा के मार्से अप्येव । दे निविव निवान निवान निवास क्रमा में स्त्री न गहेरः नः ग्रथरः तुः अदः से विगायः यतः र्वे ग्रथः से दस्तायः सुदः से दः प्रतः प्रतः स्ति । नन्यान्वीयायानेता नेयात्राद्यत्ते वे विषया में यात्रीय त्रूर्या श्री श्री सत्रुत्र र त्यर्या हे हिर्त्या नश्र्वाया नहें र श्री सत्रे के किर् नक्षेत्राने। बुग्राशहे के वेशाय हैं नवे किया केंगा नवर में वरे रना नगर <u>इस्तान्यर्भे विवानी द्धार निवेद्य के वाक क्षेत्र स्तान्य क</u> *ગુદ* સે સુત્ર કુર વશ્ચાર સુત્ર કુર દુરા હૈં કુ સારુ કરે કુ વા કુ લે શ મદે : म्बदःर्विदे विद्वारे के विद्वारे महेव संविषा स्वारं है दे प्या स्वारं स् यः अविशासदेः इसान्धेन नदा बुद्देश्यः बुद्देश्यः विश्वे स्थायकम् अविशः त्तुव नर ग्री नवस्य द्धंय सास्रव न मान्य स्था सर विषा स्थार न वे हेव प्रयुर क्रॅंश हिट् देवाश प्रदे प्रक्रेंश ट्ट समुद्र प विवा पीद प्रश्ने प्राप्त सक्द के कुः डे विना थें ना नि ने वे हैं नश हैं वे ने नश वकर थें न कं न थेना है ना हु

यर्गेन्यः से व्यान्यः स्त्रीत् व्यान्यः स्त्रीत् व्यान्यः स्त्रीत् स्त्रीत

देश्व हिंद्र श्री श्राप्त विवास के त्या के त्

देश्याचेत्राक्षेत्

कुः धेवः मभा शुः विवा वीयः र्र्ते व्या नवः श्रेवः देः स्या सेदः सवि स्वायः सवि र्र्ते द्र्ये र स्वायः र्ट्य अर्भ्या अर्थे द्रा से द्रा विष्या स्या विषय । ये विषय हित्र ही अर न्ध्र-जावे न्द्र-भेर-वर्द्ध-निया हुया विश्व क्ष्या वर्षि । व्या विश्व वि र्चेश्वर्तिः सुरान्ध्रन्यरा चुः स्रे ने त्यारा स्ति विश्वाति या विश्वरा विश्वरा विश्वरा विश्वरा विश्वरा विश्वरा र्बेट्याग्री:यार्वेदाबट्रपाट्टा हेरायेद्राग्रीस्टर्मेदेखूट्रपात्त्रपदेखेयया ग्री कें अ हिन् खुन प्रन्य श्रान्त प्री हिंदा कें निया अप या से मुक्त किन कर पर त्रश्रा ही अदः द्रयाशायदः साश्चीशाया है। हो स्वार्थः सा बन्यमानक्रीन्यदेशस्टिमान्यम्यन्यन् विद्यासदेश्वर्षा यानहेत्रत्रादर्गेनाननेत्रायार्केशहेन्धित्रन्नेशहे। नेःसूर्धेत्रत् यायमाष्ट्री सदि सेवामायद्वासी स्रो नादे नववा द्वीमायायमादेशसे द्वारा वादा विना ने के त्र्या श्रुषा शुर्मा श्रुम्य प्रवे श्रिमा सूत्रा त्रुना । ने के नर्मे या हेत नरःळन्:सेन्'यसःग्रीःस्नियःग्रीयःहित्रसित्यायःसिन्यायदेः क्रुःग्रीत्यर्गः यवस्यानग्रामायस्य स्री सदे सेवासाय ५५८ तर स्रामी प्रति स्री स्राम्य गिर्वर्र्रित्वायात्रर्द्र। यवकाभ्रयकार्द्रव्यूर्कात्वर्ज्ञ्याकाराद्रम् क्रिक्रा क्टानवसक्टानार्सायसाधी सदार्मनासावरासासीसामाधियाता यर है उस पेंद्र सेट स लेश संदे क्रिंत्र द्वा राय है। यदे पाहेश सर्ह्य स यदे में अन्य मान्द द्या पेंद्र या या पेद है। या या वे काया सें म्या हेंद्र

बॅरशःग्री:न्रेंशःगहेत्रःनरःळन्:बेन्:ययःयःगहेत्रत्यःवज्रूरःन्गेंशःयः ५८। मुःसत्वुद्द्रनदेः स्ट्रिस्यानस्यानः क्वायार्थेवायाः हैवः सेद्याया मुनाः दर्शे न धेव म नेवे श्रेम नियम कु कन म वे कु श्रे न दस हु म नु श्रे व म र्शेन्यशन्त्रिं में कु हिन्यार्ग्यायाययामान्त्र। कु नवन्या हे कु हिन्ययेया वर्रीन या सार्हे सामरामार्डे में राष्ट्रेराया में मान्य निमानी सार्ह्य रायसाया क्रिंशमानविदार्दे। यमनुष्रामाविषामानुष्रामानर्देषानुमान्नीक्षेत्रानुमानुष्रा यानिकानायासी देवारम् नया विष्तु विषत् विष्तु विषत् विष्तु विष्तु विषत् विष्तु विषत् विष्तु विषत् विषत् विष्तु विषत् विष न्रेंशानिहेत्राचराळन्थेनाय्याम्बेशाञ्चराम्यान्त्राच्यान्त्राच्या धे अवे ने त्या हैं ना हे धेव परे हिन पर लेश द इस हैं ना ने हैं सर में विना प्रमाना त्र अ न् गाय प्रये मात्र न प्रमाय विना पर ने त न ने अ न न समुत प्रये । गहराक्रेंद्राचा हैद्रायम। गल्यायाद्रमें गानदेव के माहेदा धेवाय देवा क्रॅंट हेन हें न्या राये क्रेंन राये ज्ञा सेन थे जेश ही खुयाय क्रेंट हेन खेत न्वीं अर्धि से हिर हिया संक्षित्र हु स्वायन्त्र में सुर इर्थ पर हिन हिन ग्री-नर्वे रश्रासायशाम्बदानुः श्रु-नः रेम्बराश्री रेम्बरायान्यन् श्रु-पेनि ने स्टाने के हेव प्रमुद्दार प्रमाना र्श्रेमाश्चान सहसामानमा सन्यो प्रेश की शामी लिल.मी.मटायबुय.ल.कूँश.यंश.म्रीट.सम.योशिटश.सह.मूय.सह.रिय.

डेना ने शार्ड न्यान्त्र अक्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या न्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या न्या क्ष्या क्ष्य

ने लाहेन हैन दिन प्रमेश नर प्रमुद्द निर्देश हो नाया स्वीतास निर्देश नि थेव'स'ने'न्या'वे'स'नेय'सवे'स्व'नेव'न्य्य'य'न'न्या'यो'थे'नेवाच्या'स' सेन्सिये पुर्वा में स्टानिव त्या हैं सावसावी साधिव हैं। दि व है वि व। सा रेग्'सदे'र्न्न'रेन'ग्रेश'र्ह्से श्रेंश्रेश्चेग्'हसस्यर्ग्न्य सर्न्य्या ग्रेश्वेस मदेः पुत्रात्या देश्वात्वरा प्रीतार्वे । निः विष्वित्य विषया वा विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषय ख्र वर्ष राष्ट्र भारति हैं दिन पार्ट के निर्मा प्राप्त स्था वर्ष के हैं। वर्ष के हैं। वर्ष के हैं। मेन्यिः कें या उत्राह्यान्त्रायया यन्यायम् । वियायाश्चरया यदे स्वरादे वि र्देव शुः श्वेद से नश्वरावश्वराव दिन त्य प्रदेश क्षेत्र है। हेव प्रश्नूद प्रवादा सेवास नकुर्ने दे के देव द्यायाययम्यायायये यहसामावमा पो नेया ग्री देरा से ननेवायानमा ह्रीं गुवाहियायाननेवायहिवाशीरियाननेवायययात्रासूनायये यार्बेश्वावयावी नर्डे याय्व पद्या श्रीयाद्यो क्षेत्र द्या पदी वे नदेव पाद्या यवसर्देव न्यानदेव मास्री वदे सुर्से सुर्ग से नासे के सारव स्टान विवा ८८ मूर् युर्च मुर्ग हुर दे प्रमाय स्थापन या स्थित विया मुख्य स्था स्था दे स

धेव ला

स्रम्हें न ने नम् अनुन मा हा लेदे ह्या न लिता ही स्रम्में न लिता है। सहस्राम्बन् । सन् स्त्री । से स्वास्त्र स्त्री । से से मार्च में स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्व वयार्नेवान्याननेवायाम्बुर्यायान्या नेवायाम्बेम्यायास्यास्वानेवायाम्ब न्याननेवायायाधेवायराम्युर्यायये क्यान्ते ने स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान् क्ष्र्रा ह्यर व्येत् व वे अह्र याव्या पो ने या देया देव प्राप्त देव प्राप्त हे वि व हेन् सेन् मदे धुव म्वन हेन् वर्द्य प्रमान सँग्राम महुन वर्षे ग्राम पदे गुर्ने ह्नामदे के शाह्मश्राम्य विषय । युवा से दायी से श्रेश्वराम्यादेवात्र्यानदेवायादे।विष्वाक्षेत्रहेनायाद्यीयाश्रेष्वेयायदे।देवा धेव मदे भ्रेम दें व दें व दें व दें व प्राप्त ने व पर दें वि व वे व के के व पर वे के वा प्रवाहित ॔ॿॖज़ॱय़ॕॱॸऻॾॕ॒ॸॱय़ॱय़ॱॸॖ॔ॺॕॴय़ॱऄॸॱॸॕॱॿॢॺॱॺऻॱऄॕॗॸॱय़ॱढ़ऀॸॱख़ॱॸ॓ॱऻॕॎॱॿॱढ़ऀॸॱ डेशार्विः दः ८८ दिश्वा निष्ठेश क्षेत्रा क्षेत्रा स्त्री श्राप्त दे । दे निष्ठा सः हित्र श्राप्त । ८८। विविद्यक्षेत्रस्ति स्रमायन्ति त्या क्रिमास्य दे स्रमास्य प्रमास्य प्रमा कुंयः वाशुसः उदः सः नवाः यः नवावाः श्रुनः ग्रीः धेवाः क्वें वादः श्रीः नरः सेः ग्रीदे । श्रीरः ग्रात्र केत्र से इस्य विश्व स्था स्था सर्वे निर्दे निष्ठ निष्य हिस्स स्था निर्देश निर् हे मल्रादेव अर्देर नायक न् कु माया के नायश्वर रामी पर्देन मान्य समुद्रा यदे के ना नी दे के उठ ही खट है समा है सुन सुन ह है है दे दे समा है सा नाय के न स धीव त्या हैं ना नो दे रे ना स स स के ना नो रे से मिं वर रे न व स न स

षस्रभाग्नेन्यादे त्यायादर्दे सुरार्दे सुरार्दे सुरायदे सुर्दे त्या स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व धॅर्यस्य न्यात्र विष्य श्रुम्य विषय निष्य विषय विषय विषय विषय ग्वितः परः क्रेंदः संक्रेदः क्रेंदः संक्रेदः दरा स्टान्वितः क्रेंद्रः सः क्रेद्रा देवः द्रसः सः क्रॅंटरमाहेट्र कें नका ग्री क्रेंटरनिवेट कें का उत्तरमा क्रेंटरहेट्र धेतरमे हिनर्दे क्रिया यदे क्विन हेन र्'इन्य यदे इ. नेय इस नन् ने शे खर हे । लट हिन शे ख्राय न्याग्री: अन्नेयान् : व्यान्य : न्यान्य : विगायशादे त्यार्या र्या में क्षि तथा यदेवा विश्व श्री व सायवा विगा गाहवा वशा रेट्रा अप्त्रा क्ष्या दे प्यटा इर ने या इया नन् राष्ट्री खुटा केंद्रा से दाया हेन्द्रा रद्या विवासेर्प्याहेन्द्रा देवद्यायासेर्प्याहेन्छ। स्रवश्या ने किं त है न क्रें न जावे कें अ उत्त नु न बुन द अ ने द न अ न में ने अ क्रें न म क्रेंबरन्वेंबर्यायरळेंबरहेर्येंद्रयर्दा देवर्वययर्थेर्यावहेबर वनायानायहेन्यायदेग्यमेनायवे केन्दी विश्वास्य स्थापे देवानी ने न्यायी अन्य शुर्ने वित्र हेन्न्य हेन्य हेन्य हेन्य हेन्य वित्रे व्या उत्तु प्रवास वयार्नेवान्यायरार्ने वियार्थेटाययय। यर्नेरावार्थेटायां हेन् स्ट्रेंटायां हेन् स्ट्रेंदा मदे-न्वें अन्य प्यतः कें अन्तेन प्येंन् मन्ता नें वन्य मन् सेन् मा वित्र वनायानायहें नामायदे वर्गेनामये के दार्दे वेशानश्चर्यामये देना शास्त्रे वर्त्रेशन्ता नर्तेशामायान् वेशामदेष्यम् श्रुदेन् शामानस्थायाने देवादशा श्चेरकें अरहेर दे रूर नवेद हिर यर गशुस ध्व धेव यर रा रूर नवेद

श्रीशश्चानायाम्वान्वाव्यास्यान्यान्याः नेप्तिव्यान्यान्यान्यास्य ५८। र्देव:५४:५:वर्देव:४४:अ५:४:४वाय:वःदहेव:४:५५:५वा:ग्रट:५वेवा: र्शेन्यश्वर्ष्वरहेश्रायदे देवर्षेवर्षा बुरायश्वरावस्थाय हंश्र मुक्षायेव सर्वेदर बुन'म'ने'भेन'मने'मेन अ'र्ळन'कुल'र्ळन'र्ळे अ'हे अ'सर्न'मने'न्तु'अ'ल' वह्यामवे वसूर्या देव वर्षा सूराम हेर सूराम हेर सूर्य राष्ट्रे स्ट्री रामवे नर्वेश्वराधेनिने क्रिंटिकेन्यनेवर्यरायहेवर्यानक्केंवर्यकेन्त्र्वाश्वर्या यवे भ्रेत्र देव द्वारा क्रेंद्र या क्रेंद्र यदेत्र क्रेंब्र या या दर्गे का या खेद दे। हो ञ्जापार्श्वज्ञात्रप्तम् । ह्या ह्या शुप्यदेव प्राप्तर्त्ते ज्ञापिते के दुः त् । ज्ञाह्य । स्व धेरा रद्या ने स्वापित होता है दान है ने से साम निष्य का न इसराग्रीयानेयापादरासर्वेदानयाग्यरात्र्यायायास्यास्यास्यास्या नर्ह्मेना मदे के दः धेव स्वरे श्वेरा हे या ग्रुट्य संदे श्वेरा म्वव स्पर श्वर वन्यार्नेत्रान्यायार्केनायाः हेन्। ग्री सेन्यावी केया उत्राधिताया वहुणाया हा वर्षेयायमाग्रुम्मावेमायान्त्राया देवान्यायार्ष्ट्रमायार्षे ग्रिकेश उदाय अवदा ग्रिक्ष हुन हिन धिदा न्वेश सा इस्तिश किता यश्राम्ययापानापाराधरासेर्गम्याम्ब्राम्यु । द्रि । द्रम् । द्रम्यायापानि हेर्सु द यार.लर.श्र.वर्या.चर्या.धिर.धेर.श्रयात्र.क्षेर.क्षेर.धेत्र.ध्रया.चत्यात्र.चर. यर्हें द्राउँगा

ग्वराधरार्त्ते वस्त्राम्यास्य सहस्याविषा धोः वेर्मा ग्रीटिं स्पर्ने सामा स्रितः हेर्गीश्रासाद्यतात्र। सन्नर्मुनायार्स्ट्रिन्भैश्रासाद्यताग्रराह्रास्ट्रस नवे न्यान्या यो नेयान पर्मे ना नित्र के या है नाया धीन नव न हैं। वसम्बार्यास्य सहस्य मानमा प्यो ने बार्गी में में मानमे वास्त्र में स्वार्थ में वास्त्र मानमे वास्त्र वर्हेना मुन भी भें न नि क्षें न नि कें नि नि माना सम् माना सम् माना सम् ग्वनाधिःवेशःग्रेःदिरःधेर्प्यश्वम् सुग्रिःष्यःवहिन्।से सुर्वः से वहिन्। यसरे सर्वेट क्रेंट क्रूट्य पदे पर्वे वा नदेव या वाट वी वावट ग्रीया सबर हुवा हुः र्रेटः स्रूयः वा अर्हेटः र्रेटः स्रूट्यः पदेः दर्गेनाः नदेवः देः न्यादः नीः नवदः ग्रीयः र्देव-द्रयानदेव-याधेव-यादे-धी-वावद-ग्रीकाः इयादर्शेवाः ययादे व्यायवद्यानाः , र्वेट निवे कुंया इसका येवाका सर विकास निवेश केंद्र सी वाहका कुंया सरा इसका स्वापन र्धे विगाय र्ने व र्ने सान्दासमुब पदे प्रमेया न विन् मुन्यस्य द्वारा से व सी इसर्हेग्।सर:८्गारेग्।रर:वेग्।रु:दर्गे नारे देशसेर्ग्री:रेग्रश्रदेपर्वेशः न्दासन्त्रमानियाः विया विवा विवादायम्या यानिवार्वे वार्षे नामा वर्देन्यायायन्त्रायात्त्र्याक्षात्रेयाये विद्याया द्वान्यस्य स्वाया स्वाया ग्वितः धरः वर्गे गः नरेवः के अः हेर् सेवः वदरः इसः में वः वसः में । कुः सळवः नानवः वयः से दः सः सः धोवः ने। दिसे सः वः सदः सः प्राः स्वाः धिदः वयः र्से दः मंद्री मात्रका श्रीमका प्रमा न्या त्या पाता मात्र हो। दे से दे सम् मार्थे मात्रका

भ्रम्य। न्यासेन्यम्यार्वेयायायिव नेष्ठेन्सेन्यम् नेयावयायने प्रमः र्बेट्-मद्र-मद्रश्मन्यः मुख्याध्याध्यं नः मद्वेत्। अर्बेट्-स्ययः न्टः क्रुवः महिनाः यदे र्र्युर्यय श्री यात्र अञ्चन अञ्चन अर्थे र ख्रेर यो र वा र्षे र य र र । अर्थेर यस्य न्य कर् सेर् यस ग्री स्या मेर्ट स्थर मे र्म सेर् स्य स्वर्ध मार्थ । भ्रवशन्दा अर्वेदायमा इस में यायमा श्री शास वेदा श्रदा में प्रवासे दारा देशःदशःदेःषशः इसः धरः क्रुवः चवसः व्याविः चदेः चदेः चः वावसः विदशः स्रेवसः नठराणित्य। अर्वेटाययात्त्रयार्मेयाययानीयान्ययार्वेनायदेत्रः ख्यापटा यदे यदः विवा धेव दर्वे राषा यया यदे या राषा वावव विवा धेंद्र या वे शुः ययदः नन्तुः होन् मदे हिम् वेशम्ययः हो नश्यव विश्व विष्य विश्व विष वर्दे के अ ने व र व देव र व वे वा स ने द र द्या हि द र द र श्व वा स र वे वा नवेशन्ता नवेरावार्षेशाची देशस्य स्थान विश्वासाल्याया *ગુઽ*ઃર્વેઅ'ઽઽઃવડ્રેઅ'દ્યવે'&્વ'ર્ડ્સુપ'ર્ડ્સ'એડ્સુ'ફે'અ'ફે'ઽવ\'દ્યેડ્ર'ફ્રાન્ડે'ડ્વ\'હ્યે'ફ્રાન્ટે' षर में राने निर्देश में निर्देश से निर्देश से निर्देश में स्थान से निर्देश से स्थान से निर्देश से स्थान से निर्देश से स्थान से स्था से स्थान से स्थ इसमाग्रदासेसमाद्दार्देमामदे द्वारा प्रति। श्रीमासुमाहेन सेदी क्रेंनशः ग्रेशः देः सादेः दरः मान्नः वायः दुः केरानः ना श्वरः व्रविः देः सादेः दगाः दरः वयानवे वयानवयाने हेन् सेन संदे सेन का निम्त मुखा होन ही निषा परि नुम्याम्बद्धाः मान्याः स्वाद्धाः सुदि स्वेदाः नुमानाः दे स्मान् विदानुम्याः विदा न्यायायादी:यायोदायदे:येययादे:द्रान्यादे:कुं:दे:क्षुम:कुर:कदावयान्यः

यासाधितायमाळु याळु प्रविषाणी ळुंयानु खेनाया ग्रावसाग्रुमासममान्नी वासा वःर्क्वे तुरः इसः न्या यो : करः शुरः धदे रेटे वे रहे न् श्लु : धेव : सायव : धटः वदे रहे न धेवर्त्ते । दिःवर्त्त्रसर्वेवर्ययम् भेतर्ने हिट्युवर्त्त्रं च्याचित्रस्य सूत्रः व। रम्प्रदेव होन्प्रस्कन् सेन्प्रसं वे रम्प्रमे में सुर्य हो स्रम्य हो स्रम् ८८. परकारा स्मराधा भ्रे. पदा क्ष्या १८४. १८५१ वि. पदा पदा स्मराधा सम्मराधा समाधा सम्मराधा सम्मराधा समाधा सम्मराधा सम्मराधा समाधा हेर्'या हे गहि यह अध्यासर ग्विमा साधिव या है अ इस्र ग्राट अहस ग्विणाधे वेश ग्रेश केंश हेर सर्व र् गुश्र सदे रेंस बर संधित स्थारे क्षेत्र वत्र सदे वत्र का प्यत्र देश देश कित्र मित्र के त्या विषय सदे हित्र सूत्र वा व्या के व्यविष रेग्रथं प्रतर्भव प्राविषा असे रिन्स्या दिने रावा अवा अक्रिव अर्थ से राजी से राजी ऍन् मदे दे सेन नुम्या म्या मु सेन ने या ने सेन ने या ने सेन मदे सेना , तुः शे 'दर्गे अ' सर् 'वें र' दर्गे अ' शुः अर्वे द' न प्वे त' त्र अ' में प्य' प्य अ' में अ' ग्राट' रहा वी'खुत्य'बन'र्से' क्रेंद्र'संहेद्र'सर्वेद्र'नदे'र्बेद्र'त्र्दर्भेद्र'स्ट्रेत्र्येद्र'स्ट्रेत्र्येद्र्येत्र्ये इस्रान्नानी कर शुरायदे न्द्रा नार्य नी पर्वे नायदे निर्माने प्यान स्री न नःधेन्द्रों वेशप्रहेंगानन्द्रशे देशस्य स्वीरासदे ग्राह्य संदर्भ सदे विग निरादरे मिं में मेगाययार् ध्रिन हे श्रूयाया विगाणित है। । यदा द्या सिवतः श्रीवः वटः सदः वटः कः टटः श्रीवः चलः ग्रीः वयः सिवदः गरिवः सेवाः नेवः सर्वेट ख्या विटायर सेट साम बिदार्स सुसा यह विटाविस हो साम में स्वी गाय है।

वर्गेनाननेन न्दा में अप्याने सावर्गेना मदे वर्गेना नदेन से ना अप्यान न्वीं अर्थे सूर्या वा अर्थिव है। ने वे सूर्ये न् शे प्वी न वे अर्थे न स्वी अर्थे न न्यायान्ता ने निवित सूर वित्र वित्र ग्री है साधि सासे निवित्र से निवित्र वित्र स्था ऍन्यः धेव वदर न्याया द्वित न्यो न न्याये के के के के कि वदवयाने निर्वादित सी या इसका मानि ने रामान्त त्रका सी भ्री निर्वे के का उत् र्बे दिन्। श्रेन्यायशर्मेयानवस्रावे नाम्याने केत्रे में दे में दासके गारु पह्ना यदे र्र्से ग्रेव ग्रायस यन् ग्रासे न हैं ग्रस यदे लेस र न से साम दे न या न दे वन्नर्भान् नु नु ने निष्य स्वापनि निष्य स्वापनि निष्य स्वापनि निष्य स्वापनि निष्य स्वापनि निष्य स्वापनि स्वापन न्नायमान्यान्यः मुयानदे मुयासळ्त्रः न्ना श्रेनः पदे विष्यायायमा श्चितःसदेः श्चित्रशान्त्रवाद्याः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्रान्त्राः स्त्रान्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्राः स्त्रान्त्रान्त्रान्त्राः स्त्रान्त्रान्त्रान्त्राः स्त्रान्त्रान्त्रान्त्राः स्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्राः स्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्राः स्त्रान वर्रे वर्रे र कुषा अविवर्धे वे वर्रे र पाउँ अ अ । धेव प्रमाहे अ ग्रुवा ग्री और वर्रे । क्षेत्रप्रसम्बद्धार्याये में प्राम्याया विवास्त्रेत्या वारा ववा ने वे सुत्राया वारा येत्र मदी सेन् क मस्य र उन्ने न्दर्ने पर्वी वा मदी पर्वी वा नित्र धीत वस सूस त्या र्देवाश्वरत्यः अभिन्तेष्वर्यस्य वर्षेवा निर्देशके श्वर्या श्री निर्देश्यः वादः अर्थेसः र्धेव निवाधिव निवाधिव निवासिक इसःम्बारायमःमुराद्वेरादेराधेनायदेरध्यान्वनःविनायह्यानःनेदिन

निष्ठभाश्चर्यात् निष्ठभाश्चर्यात् श्रीत्राचित्र श्रीत्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स

ग्वितः प्रदेशानुस्रात् भी स्रोति । प्रदेशानुस्रा अपार्धे दासा हेर्भ्रिवःसन्दर्। वेषाःकेवःग्रीःसर्देःस्यास्दरःश्रेषायःस्टर्मिवेवःग्रीयाञ्चीः बेन्यः क्रेन्दिन्त्यक्ष्रवाया महिकार्ने वाचिमा तुः सेवा केवा बेन्यान्या वह्वा'सदे'तेग'ळेद'र्शेवार्याययावार्यायम्'वाशुद्रय'सर्थाहोद'सूर्रद्राचेवा' न्यवःग्रीः अर्दे व्ययः नश्चवः पदे वत्यः ग्रुयः वतः यः श्वेदः पः हेदः दे श्वदः वद्यः सळवःहेनःसरः पर्देनः सभा खुनासः पद्देः यः क्रेंदः हेनः नदः स्वादः पद्यानिकः। र्देव गरिया धेव लेश सम्वेव सामस्य हे श्चा कु धेव व सामहिया हे हिन बेगाळेदाग्री अर्दे यथा नसूदा पदे सुदार्शे गुर्था स्टान्विदाग्री था स्री ना सेदाया क्रॅरप्राहेर्प्रप्रेत्प्रविष्णहेर्ग्याहेर्म्या स्ट्राह्म स्ट्रिस् र्द्धेट्रास हिट्रा डेश सर्टे मान्द्र यथा पर्त्या ग्रुया वर्षा न सूद्र प्रथा वर्षा पर् श्चर प्रदेश प्रेव प्रवे विरश्च शुः इरशः प्रवे रे वाशः प्राच्च वा शुः प्रवे प्रवे प्राचे प्राचे प्र इरश्रासदे ने ना द्रम्य मुँ सर्दे दे । यद दे । यी विद्रमा शु भी व : तृ व श दर्मे । द्राप्त

गहेत्र में दे वर्ष सामा स्थान है। दे के मार्ने द क्या वर्ष समा वर्ष के सामा विका गुशुरुषायाः क्षेत्राचल्दायशः केवा यश्यास्त्रिः देवा येवा या स्यान्य त्रान्य स् व्यार्था । नेयावायर्ने त्ययादने त्यन्ति वर्षा व्याप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्र स्वाप्त्य स्वाप्त्र स्वाप्त्य वनानार्थायदे वर्गेना साधा ह्या वर्षाय वर्षा सामक्ष्य सामे प्राप्त विष् ग्रीभः श्ली प्रायो प्रायो प्रायम्बर्ध प्रायो है भः देव पार्व पार्त प्राया भागा । म्बर्धरम्बर्धः स्ट्रीः सः हैनिमास्य स्थूरः नमाने निमाने स्थाने स् मर्था हिन हेन क्षेत्र म्यून में प्रमें यानन त्यान हमान हैं महिन ने महिया हैं न गठिगाः तुः यसमाश्रास्य माशुर्याः सवे देवायाः हे माश्रासवे हिंग्याश्रास्य स्वा भेव वया भ्रुमामा वे खुर रेग्नामा है सामेर मा विगाया नहेव वया हुर नदे र्देवार्यायान्त्रवार्याय्यार्द्धवास्त्रेत्रायीदान्तेदान्तीत्राम्वात्राद्धवार्यात्र्या नावर यः तुर केना श्चानिर ग्वा श्चेर विना नी श वे साधिव वे । ग्वनः धरः सुरः र्रेनः रे-८८: अन्तरः न्या निवः म्या निवः सुन् ने स्था रेवार्यायाः जुवा द्वायां प्रयोगायमः इत्यायदे चेवा त्यव ग्री स्वेत्र व्यय। केत् त् त्यान्यते मानुत्यात्याचे मान्यस्य भेगास्य स्वास्य स्य स्वास्य वर्ते.स.सेश्वाता झेर्याता ह्यात्रम् झेर्याता बेरावम् क्रैमता बर्ता वर्रेर्क्षणभार्दाञ्चयाचा वर्षेषाचा हे नर्वे ना तुनामा सूनानस्या ग्वत् ग्री अळअअअ शे श्रूर विटा शे प्रगुट शे श्री न परि वे वे न वि परि वे ग्री

र्देशमा है। वर्रे व्हार्से सुरार्से मस्या उर्दारेशमा सुर्यामा श्रीरामा निर्मा वर्देन:ळग्रान्दः ज्ञाना वर्गेनामा शुःद्रनः यशःवद्रशः पर्दे। विशः ग्रुद्यायात्र्ययाचीयासुदार्थे स्टान्वेत चीया भ्रे सेट्रान्यूत यदे चित्र है। सुराने स्वरासुरार्धे वस्रका उदा बदायदे बदाया तस्रुव या ग्रादा विगा । दे प्रदा वेगा के दा ग्री अर्दे प्यमासुर में रूर निवेद ग्रीमा क्री अर्भे अर्द र्वा निवेश र्देव महिमा सर रेव छेव श्रेर निये होमा छेव निया र श्रून सदे भ्रून सर्थ गश्रम्यायदे भ्रिम्ते। दे हिन्यया वेगाम के यय अही से न यह वा विवर श्चित्र संभित्र संभित्र । वित्र प्रत्ये भ्रे में त्र त्र त्री । विष्ठे वा संभे श्चित्र वर्षेत्र यर ग्रीमा विमागश्रम्मा गवन पर वेगा मके कुर गी सर्मेर दे सूर नश्रुवःमःगहेशःर्देवःगहेगःमःधेवःहे। वेशःगश्रुदशःमशःदह्गःमदेःहेगः ळेद-८८: वन-१५ नामायानि क्रिंद-भे नाहिमानामा समीद-नाहिना हु-नाहु-मा र्द्याग्री: इ.च. महिन् मदे खुवा धेव मा श्रे शेयश श्रे। वर्गेनामास्त्रित्न् नुसामाहेत्। बेनान्स्रम् मीः खूनासेन् सुमासन्स्रास्त्र त्रुर्भासदे देव धेव सम्दर्भ साम्या सदे ने या द्राय मी सदे खरा न सूव मदे श्रेम् वेशमदे खुर दिन्याचे मान्यव मी खूमा सेन सुर दिन्य मान्य सेन क्षेत्रःग्रीःमविःसम्बरःधेत्रःसन्देशःस्यःमस्तर्भेत्रःसन्दर्भः धरःदेगःहः महाळेत्रानेत्राचे छेदे न्तुः सार्श्वे समदामहिषायशादमें माननेत्राकें शाहिता श्रेवःमद्रःश्चवः होत् स्यरः तुः वाशुर्यः सः तृरः बेयः तृरः । यरः यहः क्षेवः सर्वेवाः वीशादवीयां नदेव केंशिंद प्रेया प्रेया मार्थ प्रस्वा श्राभी भीत्र श्राभा वाहिया श गशुर्यासेन्रद्धयान्वन्यात्रस्य स्वराप्तराप्तेन् स्वराप्तायाः विस्तापाः विस् वया याधेवर्वे वे वा यहेगाहेव यहे व त्यायाय प्रश्वापाव स्थाय मर्भायदी त्या क्रिक् के विवा प्येन ने व्हर क्षेत्र क्षेत्र वर्दे क्षेत्र ववाया वर्दे विदर्भा शुःगर्नेग्रयायायाश्रयाग्यान्यस्त्रित्रः द्येत्रः यावेगाः धेतः देश्या नेश'त'ख़र'नेवे'र्नेत'त्रे'बय'वशुर'नवे'ब्रुत'र्केर'अ'धेत'यवे'ख़ून्न'से<u>न</u>'ह्यूर' वन्यायर्देवानु ग्रुख्या क्रेंवामायया श्रुमा स्वासीना श्रुमा व्यवस्था सर्देवानु ग्रु द्ध्यः र्रेह्रवः प्रश्राधीवः विश्वः पादीः व्यदः श्ववः श्रीः पाव् दः रेवः द्वादः स्रश्रवः प्रसः सः वदः न्यवर द्वस्थ नियः तृ न्यस्य स्वरे ये नास्य न्यन्य हे ना त्यः देश वहें वर्षे ना है। हिन् ग्रीश्वान्य स्वीत्त्वा सार्थे दिवा श्री स्वान स्वाप्यशा ने स्वाप्यश्वा ब्रुवा नठश श्रुट पद्रश दृदा । ब्रुवा से द श्रुट पद्रश या पर्हेवा स्तुय सुद सेंदर स लेव.स.ब्रेच.लूर.री ध्र्य.स्य.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स. सुरःशॅमशम्दिरः सन्तरार्दरः निवेदा श्रीशः वद्गारी परिवर्षे माना सर्देदा द्रा शुर यदे अद्रअः वाववा वी दे त्याने व स्थूर वी ख्रुवा अ से द सदे सुर वर्ष ख्रुवा मेर्-मुर-पर्मा निष्मानियान्यमायरमार्थे हेमार्चेनाग्री देन्त्रसुरः

स्तिः श्रीम् । विश्वान्य स्तिः म्हेतः न्यादः श्रुमः स्तिः श्रीमः विश्वान्य स्तिः श्रीमः विश्वान्य स्तिः स्त

कें भूर ग्रे ग्रुर हैं अ ग्रयर दर्भ न भेर देश अविश्व संदे धेर दर्भे गायश गहेशमार्केशयाञ्चनशास्त्रीमात्री गहेशसूटानी हेंगशासासास्यामा यश्रास्टर्स्याद्यादेशायरःम्यावेटा श्रेयशाद्यदाद्यायाद्वयशाम् ॱऀॳॱॻॖऀॱॸॸॖ॓ढ़ॱय़ॱॸ॒ॸॱऻॖऄॕॳॱॾढ़ॱॻॖऀॱॸॗॸॕॴऄ॔ॱॠॺॴॱॻऻढ़ॴख़ॖॻऻॴॻॖऀॱॸॸॱॸॖॱ र्रे ग्रिक् ग्रामित के अरित्र ने निविद्य हित्र शिर्मित स्वीं ग्रामित स्वीत स्व नुवे भुन्य न्द्र्य रदा कुन्य वित्र व क्रिंशहिर धिव मानाययां नर नाशुरसामसा विसावेर ना वे हिंगानो प्वामा दगदःवेगःगे सुग्राशः ह्रू र सुर देव म्बस्य उर र्रेग व स खु रहुंग्य र ग्रीस र्रार्सुग्रास्य स्वर्भास्य स्वर्भ स्वयः स्वर्भ स्वयः स्वर्भ स्वयः स्वर्भ स्वर्भ स्वयः स्वर्भ स्वयः स्वर्भ स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्भ स्वयः स् निवेद्रायायान्तेत्राप्ताञ्चेत्रायात्राविषाणीत्रायदेःद्वादातुः निवदा। केंशा ठव्रः ग्रीः नृह्माः स्वास्त्राच्यात्रस्य स्वास्त्राच्यात्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त

र्वि:र्विदेःनर्थसःर्द्रविद्वी स्वारक्षेत्रस्थाःस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य सेन्यदेख्रिन्देवार्या शुः क्षेन्या वर्षेवा नने वर्षे राष्ट्रेन्से वर्षा न स्वास्त्र स्व यःगविग्रयः वा ग्रायः पर्या मार्थः प्रमान्यः प्रदेः प्रीतः वर्धे गार्गे सुरः नेविन्द्रिक्ति। हिन्न्स्रिक्तिः सेन्द्रिन्न्द्रिस्स्रिक्तिः विषाः विष्याः विष्याः विष्याः सेन् सेन् वर्गा विंत्यस्तरेवेर्देवःहेरस्रराधेवावयावेवा सरादेवेर्देवावी गहेशः यःक्रेंशव्यःक्षुत्रश्रादर्शे वादी वादीशाक्ष्राञ्चरानी हैनाश्राया स्थाया स्वाया यवसाने वसामा मार्ग का मार्ग के स्थान मार्ग मार्ग के स्थान मार्ग इसर्अः ग्रे:श्रूट्यः हैं ग्रयः ग्रे:पेंद्रः हदः सुदः सुद्रः सुद्रः स्वै ग्रयः सः द्रुटः नदेः ग्रवेः सहस्राम्वमाप्ये नेर्याणी मनेत्रामयसायसामी मनेत्रामान्या केर्या उदाहै श्चेत्रप्रेत द्रियारी इस्रयान्य स्याप्य स्थित राष्ट्री प्रति द्रिया हिता स्वर हिता न्याने निवेद हेन के दिन्य स्ति स्तानिव के मान्य के निवास याक्षे ने स्वानुते क्षुन्य निर्मा स्टा कुन्य के ना क्षेत्र निर्मा के ना के थुया ठत हिन्यम ठत नने ना केत सेंदे थो लेश नमा थुया इस ग्रांत सकेंगा

पिश्रामेन्यत् । विश्वासदिः द्वाधेन्यदेः द्वीत् । देश्वान्यव्यश्चित् बेग्।ॱसदैॱदळ८्र ॡॖ॔ख़ॱबुद्रः ॲटॱसःधेदॱसदिॱदद्रॱतः सर्दे ॱर्हेग् सः शुः न*ल*८ः षस्यान्ते । साम्यान्त्र । स्वर्मान्यान्त्र । स्वर्मान्य । स्वर्यान्य । स्वर्मान्य । स्वर्यान्य । स्वर्मान्य । स्वर्यान्य । स्वर्याय । स्व न्देशन्दरम्बुद्रस्वे त्र्योयः नभूदः हेना निब्दः नहेशः दः सानिन्यः क्रुनाः तुः येद्रायराश्रेयशाही द्येरावा कैंशाउदादेंशारीं इयशावेशाया केंशाउदा हे स्रेन्ग्त्रहेन पदे के अत्स्ययाय में न्वें य निराम्त्य स्त्रम्य छै। रहानु र्रे गिठेग पदे कें अ हे ८ ८ सारे प्रवेद हे ८ के अप हे ते ५ ५ मा से ८ में हिंद हे ८ यावीं निर्वाकारकाने हिनासर्ने ख्वाका शुष्टम कुनाया विकासे व यावर.कूर्य.कर.मै.चूर.जी.यावयायाशी.वृचा.चैर.याश्चीराट्टा लरावह्या. यदे ते ग के व र द । कु द सु र दि ग ग वि व के के के सु के व व के व व नर्सूर्राम्यात्मा कृत्त्वां सदेख्यात्मस्य । इत्यात्यात्यात्रे । वड्या सेसया ग्री केंया हैन्ने। देः अन्नावरुषायमाम् मुस्यानेन। क्रिया उदादेः वरुषाग्री सेस्या द्रे^ॱसर्थाः हे 'न्या'त् 'श्रॅन'त्र'त्र'ते 'केंश' हे न्यान दे 'स्या'ते 'स्या'ते स्या विन हिर स नदे लेग्या न निन दिन दिन हो यस निन में ৳ৢয়য়৻য়য়৻ড়য়৻ৼয়৻য়য়ৣয়য়৻য়ৢয়য়৻য়ৢয়৻য়ৢ৻য়৻য়য়য়৻ড়ৄয়৻৴ঀৣৼয়৻য়ৢ৻ न्नामध्येत्रवेशकेशकेशकेत्रपुरअर्धेन्यदेकेशकेनापन्यामस्युःसर्धे विवाः अवीं व्यक्ते अथा वर्षा वी वर्षा विष्या अवि विष्या श्री से स्वार्थ विष्या श्री से स्वार्थ विषय <u> ५८. नडशासायाधीवाववरादी या इसशादे हिन् ग्री क्षेटा ५,५० मार्थे राजा ५८।</u> म्बर्धावान्दरः विचानविदानादः प्यदः सेदास्य सेदासः हिदाने विचानि नेदेवादिसः <u> देद्र हेश श्रेम्याम्बर्धरयाम्बर्धस्य स्वर्धेन स्वर्धान्य म्याम्बर्धान्य स्वर्धाः स्वर्धेः स्वर्ध</u>ाः न्वीरश्यान्वीर्दरन्वीरश्यान्दिश्यायान्वीन् होन्याश्रुश्याः विदेशीन्या न्वीरस्यायायेवावायामित्रायाकेवायायेवाय्येवाय्येवात्येवायायेवात्यायेवायायेवायायेवायाये पट्टी अट्टी नरमा मेममा है किया है दाया नरमा मा में दिसा है दाया नरमा यावरायेद्रभेषर्भेष्ठास्त्रम् विषात्यायायायायायाया र्सेनामानकमामानिमानेनामान्दानिमामाने। स्त्री स्वरमानेममाने। क्रिंश हे न न न हो न क्रिंश हे न न हे अप्यया अप्यये अहआ न विना थे के अपेर व में ग्रेग् मदे न्वरंग्रेश्या व्याप्त्र व्यास्त्र व्याप्त्र व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व गवि गवि समुद्र र्मम्य नम् द्यूम में श्रूषा है। श्चेरवे दे नठका केसका ग्री केंका हेर् दे दे सार्ट नठका मानका से दार्ट प्यट कैंश हेन ने या दे साधेन हेश ह्या ना से मेगा माने। ने प्रमान हें माने किंश हता श्रेयशन्।यानार्धिन्यात्रयश्राच्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्यात्र्यात्र्यंत्रच्यात्र्य न्वीं अर्भान्ता ने निवेद क्रें त्यावे कें अरुद्धारा वात खें न्या ने वस्त्र अरुद्दे वे क्रॅंश हेर् त्या पर पेर्ट हेश विशा खेर र वे शायर विद्युर रे श्रुया पर। विदार <u> न्यायः नवेः नावशः शुःयन् नाः सशः र्ह्वे । व्यायः नवः नवः स्वशः ग्रीशः न्युन् । सरः</u> दक्ष्यःस्।।

णर्द्धः नवस्य सेस्य श्री कें सहिद्दे दे साद्दः नवस्य सावस्य निकास निकास

न्यायाः श्रुस्य स्वरं त्र व्हर्न स्वरं श्रु त्यायाः भ्रुत् त्यायाः भ्रुत् स्वरं श्रु त्यायाः भ्रुत् स्वरं स

यद्याय श्री प्राचित्र स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स

र्षर्ग्युः दर्देश्वः सं खुवः द्व्युर्ध्या देश्येदः स्थान न मार्थितः ग्रीः के शवर्गेनाः ननेवाध्ययः नुः होन् । मदेः बनका कोन् । मदेः क्रुः सळवः हो का धोवाय। देः वाने । सूनः क्रॅंट हेट ग्रे क्रंट न यथ बट पथ दे न न न यथ यह हथ थेंट ग्रे कें यक्ट हु सेन्-सर्थाः क्रेन्-दे-प्यम्हर्या यहनार्या यामान्, दहेना यास्य सुर्या पदि देनार्या मायळम् श्रेन् स्वाहे ह्वासार्वेन्य केत्रे स्वान्त्र सेस्राम्य मे युग्राया र्स्ट्रेट हेट या ह्या गुर्वा हु गाह्र व्या से प्रवेट प्रया है हिट ह्या नन्ग्रामानेशासु से नदे नन्ग्रा व्यापा विष्या हैं वसम्या सारि सहसा ग्वमायो ने अप्याम्म्यानि ह्यामुन श्रूट र् से द्रास्य निम्यास्य ग्वग'षे'नेश'ग्रै'भ्रवश'शुंरि'हेंद'ग्रे'ग्राच्यश्यवि'ह्रश'ग्रुव'शे'सूद' वयरः अष्ठअः नावनाः यः यह्नाः भवेः श्रें रः नवेः श्लेन अः शुः नदः में 'धुत्यः नु अः सः सूः तुःह्र्यानुनः केंया निनानहेदाद्या रेया निवा सहया निवा ह्या पराधी हेंगा थे ने या न दा धारा है दा या है दा या है या खु या खु या वा यो खुंया दु हैं अया यह वह्नामधितम्बर्धाने नेवानेवाकेन्यम् अर्देन्त्र्यम् न्त्रेन्यम् मदे : क्षर : नदे : ब्रेस् वर्ष : वर्ष : स्वर नन्गरार्धेन् धेर् नर्भासहस्याविषा वर्षा सेन् धेर छेर वर्षे वा निर्मा

अर्बेर-व-ल-वार्वेर-छेर-सेर-छेर-सूव-छेर-तर-ध्व-ध्य-रेता दें-व-हे-वन्वा हेन् केन् में अ दे अ सेन् पदे सेस सम्बन्ध में यायस मी सेन् पहेन् या दर्गे ग ननेव भेव नर्गे माना व्यव न् सम्माना सुरमाना साथिव वसावे वा दे नरमा श्रेमश्रामी के श्रिन दे दे सान्दान रुषा विषा मदि दे सा वे श्रेमश्रामी दे सा यशः विवाशःशुः शेर् प्रशः केंश्रा उदाशेस्र दी स्रा है । सूर र्पा पारे । सूर रेदे क्रॅंशक्षेत्रग्रद्धाः स्थान्यान्ये अष्या देशक्षः द्वार्यदेशेस्रथः ग्री क्रॅंश हेट्रे प्यायमें नामिय निवास ने सामिय महिता स्थाप स्थाप में ना ननेवायार्भेराहेराग्रेशाह्यारेशायादीयाराहे त्वासार्वेरायारे म्बर्स्य म्बर्ध्य म्बर्धः म्बर्यः म्बर्धः म्बर्धः म्बर्धः म्बर्धः म्बर्धः म्बर्धः म्बर्धः म्बर्यः म्बर नभर रेत में के मार्थर शे सेर न तथा वि है न वर्षे न न ने तथा है न वि त हेर्ग्भिश्चित्रास्य पर्देर् हिर्। याववार्या यक्किं मार्श्वेष्टर् रास्ते यहिषाम्य ग्रद्भावितातुः सामहत्रासारा स्ट्रे विसाददा यदादे हिदायसा तुसारसाद्वेद यदे अर्धु म्याद्र देवे से दर्ज तुसाया नगमा का महिसागा तुसासे दार्थ दाया क्ष्मा वसमाया कुन् ग्री ने निवेद हेन निरमे वे से मान्य स्थान के सामा किया है निर्माण किया है न ळ नहिरानितर तर्मेना नितर लेका है। दे के प्यत्या में अप श्रम् नि श्रम्या यदे दर्भ सा गुर्भ पीत प्रभार्भे । विश्व क्षंत्र प्रता में हे दे प्रमाद सुर यदी खुः तुवे हे अ शुः यज्ञ दा क्षे पे पे प्ववित के ले अ पहें दाया या वा वा प्रदा ग्वतः न् व्यव्यान्यः स्वरं के मा क्ष्या स्वरं के मा क्ष्या स्वरं से विमा संवेद । पर ने द ग्री-श्रेट-र्स-य-समापाष्ट्र-दर्गेशनाविषामाधितार्दे श्रुमा

देश'द'यन'हे'त्व'य'र्रेंट'वि'य'ळेद'र्येश'दे'य'ये'ये'दे'येयय'द्रय' मुँखालमामी क्रूमा हेराया नहनामा सदी द्वीया सर्दा स्ट्रीया सदी मु सक्ता नर्देशायाम्बर्निन्द्येन्यास्य स्ट्रिन्य वेशमंदेः मञ्जून सहन् माधेवाया ने प्यमन् मार्थः निर्मेशमंदी निर्मेशमान्य ने प्रदानवे के अ हिन्ने दे अ अन्यवे अअअ इस में प्राप्य मी के नि वर्गेना नदेव द्राप्त न्य देशे के स्थान शुरासबराष्ट्रीतासात्त्रासात्त्रासात्त्रासात्त्रीत्रामात्रीतास्यात्रास्यात्रास्यात्रास्यात्रास्यात्रा क्रेन्न्राप्त्रा वर्ष्म् म्याये क्रुं अळव वे वे उत्तर्भेयाम्या या क्रेर् या ८८. स. ययाया. सा। क्रूब. हेर. ही. ८४. यर स. ८८. सक्टर सा विकाया शेरका स. गी'वर्गेना'मदे'नदेत'म'गहेश'में'दे'सहस्राम्बना'देवे'में'दर्गेन्तेर सेट् यवसानिवाहु वसावदाके नवे कु सक्व क्रीयाधेवाया दे सूर सेवावाद्या गठिगारु क्रेंद्र गिले कें शाउन प्रेंट ने हिन महेन से दा धेन प्रेंद्र स्थान स्थान हैं न्यायाया क्षेत्राययात्रायवना न्यायायये श्रीम् न्रेस्याया नर्वेन् श्रीन् प्रेन्ते। ने प्रदानित के निर्मान प्रतानित हिन्यम मार्थिय निर्माण के स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व नवे प्रत्रुभ तु पर्वे वा नित्र प्रेव प्रामान्त्र त्र भ से निष्य प्रामान्त्र भ ने । नविदःपयग्राध्याम् । प्राची । प्राची । स्रोच । प्राची । स्रोच । प्राची । स्रोच । प्राची । स्रोच । प्राची । स्रोच

वर्षेत्रायनेत्रः शुः र्भेत्र

शेसशाग्री के शाहित त्या दर्गी गा निते त्र साध्य त्य हिरा त्विशास दे । सहता स्रीता स्री ग्री-प्रिन्। देव-ग्राम-ने-न्वा-श्रम-वन्य-म्य-वर्षावा-वनेव-नेर्म्य-श्रीव-प्रवे-श्रिम्य-सिट. वे. त्या. थे. प्टा. सिया अ. पहूँ या. पहुं अप अ. शं. पक्षरं प्रयोपः श्री. सिट. प्रयोपः ने न्या मेश त्र्राया या वर्षेत्र त्येया के या श्री विष्टा वर्ष वर्षा वर्षा वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वःसर्रे स्वायः रवः दश्यम् अः वः यहः क्षेत्रः वर्षेत् वस्यः ग्रावायः यः सर्केवाः गैशन्ने निवित्र हेन् न्दर दर्गे गानित्र द्वारा मध्य राज्य न्तर प्राप्त प्राप्त स्था न्रेंशासु मासुन्साम्साने प्रमानिक के सामित्र मासिका श्रुन्से सहन कु सळव नार धेव वसावे वा ने वे निर्मेर वा वसनाय सहस मॅ्य क्रेंश वर्ग से ८ 'ये 'ये श में क्रं के र मिर्ग के माय थे 'ये श क्रेंश क्रुंदे व कैंशः भुः सेन् सम् १ निते भुँ वासे १ वहुमान निवा मह केवा सुः सरा ग्रमा कैंश ठद दे नठश भी सेस्रा दे समाहे द्वा हु सेंद न द्वा देवे केंश हे द ग्यूट इ.सश्र.ह्र.ट्या.धे.पज्यू.बुट.यायश्र.शैर.शबर.ह्येय.त्र्यूय.त.य.पट.यख्य. न्यायी कर शुरानवे दिन्दे हिन्सूर शुराया वया श्रीयानवे यायया ने त्या दर्गेना निर्ने ने श्री श्र श्रू न सास है न श्रू न त्या श्रू न न न प्य न से प्यू न न न से प्र ह्येर:र्रे:श्रूश

र्वि:र्नेशःर्देशःक्षेत्राःतक्त्रम्यःत्र्यः वर्देत्ःयःवे:द्वे:येतःसेस्यःग्रे:क्रिंशःवेतःदेः यःवर्गेनाः नदेवः वेशः पदेः चः श्रुद् । नहन् श्रायः यात्रायः वर्षायः नः सेदः ग्रुदः र्देवायायमें मानदेवाधेवासेवायायायायायायायार्येदासमायदेदाग्री खेदा ह्रीमावे बःश्वरःवर्रेग्रयःश्वरयःशेःवरःचःवःचहेवःवयःर्रेवःवःधेवःश्वेदःश्चेःवगःर्केरः <u> चःकुःवे नगदः नवे मावसः सुः वर्गाः ससः विः वे सः विनाः हः ने नासः मार्वे नः कुरः हः</u> विग्। त्रमः पर्देन। ग्वमः परः यहः क्षेत्रः मर्थेनः त्रस्यः ग्राम्यः यः सर्केगः ग्रीयः वयादशुरावदेःख्रम्रायायादर्गेम्। यदेवादेवाद्यायदेवायाधेवाग्राटाकेंशाहेदा श्रेवाबेश्वासायदी या क्रिया हेवा की खुटा खेटा या श्रुया होटा की प्रेया श्राया प्र य्रि ने प्यर प्रस्थित अर्दे यथा श्रेव अर्दे र अविद य है न विव य दे र वि श्रे म्र्रियायायाद्या । भ्रि.स्रान्यायद्याययायास्र्यम्यायाया वस्र उर् सर्वेट संयायया विस रटा के स र हिट्स न से दिराय स्र क्षेत्रः त्वः यः क्षेत्रः या । व्वः यः द्वः या श्वः यतः स्वः । । देः यवे वः स्वाः यतः वि श्रायायमा विक्रामी भ्रायम् द्वमा विक्रान्मा यम्मे देनायश हे सूर हु न स से में विवाद र हिताया प्रमेया नर सर्वेदा । दे निवित साया व्यायात्रस्ययाग्यम्। |रेयाग्री:रेयाग्री:प्रयेषानरःसर्वमः। |हे.क्षरःष्यःरेयाः वर्डे खे.ला अ.व.ह्वाशासरावश्चरावाक्षरा । दे.वर्षवाशास्त्रवराश्चरा व । क्रिंग ग्री भु प्यार हे ग्राया विषय प्राप्त । विषय प्राप्त । विषय प्राप्त । विषय प्राप्त । विषय । क्ष्र-नर-सूट-ग्रःहेश-सिम्बान्यान्त्रया ग्रीया । नहेंद्र-मःनुयायाधिन विद्यो

सर्वराष्ट्रम् । दे नविव कुषा श्रमा की मानु प्राप्त । । नहें द से न्या सम्बर्ध यर गाय तुर्या विरादर। कुर हुर देवायया व्रट कुर सेस्य द्वर दमग्रामा सम्मा भी या यह या है या रे या दिना हु। अर्वेट नया नुया हुट वट अर्वेद्राचि देव धेव की कें अर्वेद्रा अर्वेद्रा शुक्ष द्रिष्ट्र विश्व खेंद्रा अर्वेद्र की के खेंद्र यायर्नेन्यादी इस्रामन्यास्यास्यास्यान्यास्या नेस्यन्या सुन्तः नगवरम्भेषाम्बर्ग्धः ह्वार्द्धरायम् इत्रक्ष्यासेसस्य प्रतिसाम्बर्धः स्निनसः शुःश्वरः वुः वे देवायः दरः व्रवः वर्षे वा वरे व दुरः वरः यर्देवः शुयः तुः यर्षेतः वी नवा कवारा शे श्वेन मा श्वर्या मदे अवस्त्रुवा सर्दे सुया स्त्रुय तु सा है वारा मदे र्देव-दु-द्व-दर्गेय-श्री वियायान्य दियायान्य प्राचियान्य स्थित हिन सर्वरायायात्वरायराभेराग्रहा क्रेंशाश्चरायायात्वरायराधेराया गशुरश्रास्थायमें गानित के शाहित धीत त्र इसामावना ने मान्त त्रश्री इत्यासा वत्रीया सामा समा स्वर्था स्वरं विष्या न त्या स्वर् त्या स्वरं त्या स् व्याः श्रुः नः स्ट्रमः स्वायाः स्ट्रीमः स्ट्रमः स्ट्रम् स्ट्रमः स्ट्रम् स्ट्रमः स्ट्रमः स्ट्रमः स्ट्रमः स्ट्रम यदे द्वाप्यविषा हो दाया विषा त्ये दार्गिया यस प्रत्या वा प्रति हो हो स् यसर्केशःसकेंगिःकेदर्सेशः इसः मेंयः यसः मस्याः उदः पदेवः सेदः दुः हैंगियः मर्भायमें मानित्रम्यस्था उदाहें मार्था मंद्री म्यानिता सर्वेदायस्य मरास्टरा सेद्रायस ग्रीस ग्राद्रायमें वा नदेव वसस रुद्रासदेव सुस द्रिन्स मार्थ वया न-८८। वायाने अर्हेवायान अर्हेटाययानर कटा येटायया ग्रीया ह्या में या

यसम्बर्धाः उत्तर्वेदासेत्र्यं स्वाहिष्याः प्रति म्यान्त्रा सर्वेदायसम्बर्धाः मुंबालमालराने निवित्तास्य दिन्या निवास नेशन्त्रात्याश्चेत्रस्थान्द्रस्याश्चात्रात्यात्रात्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्य सर.बल.य.रटा ४४.रट.यसवाश.सश.श्रट.यर्श.स्ट्रं र्.यंश्र.क्ष.दे. क्रॅंशक्षेट्र अर्देव : तृ चुया द्धंया यया वें ज्ञाया खु : येट्र : यं या चुया खु : वयानाम्मा निहेत्रास् क्रिन्यानिहेत्रे क्रिन्या ग्रीया क्रिनामाम्ना स्वीत्रा क्रिन् षरः र्रेट्र हेट्र च्या न प्टा र्रे र्रेट्र नह न्या श्रेत्र वर्गे ना साटे ष्यरा र्रेट्र क्षेत्र:धेत्र:दर्वे अ:स्रशः शॅर शॅर:यहग्रय:यर्वे ग्:द्र: छुट्-स्रेट्:द्र:बय:व:द्रः। N-75-रिवे-र्स्नेस-प्यस-तर-कर-सेन-प्यस-शि-सेन-पी-केंस-हेन-ने-सर्वेद-र्सेन-श्रूर्यासदि तर्वे वा नित्र द्वाया नित्र द्वाया वाया है है । सूर्या धेवा वाया है न वहें बर्भवे न्या कर से दायस पेंद्र स्य म्या न दर्ग यह दे वि यम्भाक्त्राम्यायम्भान्यते कुन्न्यो सेसम्यो कें मानेन्यते नामनेन धिन रेग्रायाधित मदी वया ने न्दा ग्राया है ने प्दर नदी के या है न ने प्दर्शना यनेव'न्र'र्रायवेव'गव्य'रेग्य'ग्री'गवि'सन्नुव'धेव'व'र्यस्य राज्य व्याप्त उद्दादनद्र सेद्र दुः में वा नदे नवा नद्दा विद्यान दे हैं। सन्नद्र हैं सन्नद्र हैं द हेर्'भेर'सदे'बय'न'र्रा ह्वाय'सदे'यर्थ'कुय'ग्रे'यर्त्याद्र्यायानुय'ग्रे'

मुन्तिक्षान्ति । विकायन्ति । विकायन्ति । विक्रम्ये ।

अद्याक्षात्त्रव्यत्विषाः वीयायद्वात्त्र्यात्त्र्यः हिष्यायाः ये विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्यात्त्रः विद्याः विद्य

नदे हिराहे। इ नेश हमानन्य निष्य र र र र नी कु के तथा नहेत वयावतुरःव त्रवावत्रयायागित्रवयाया इयया दियाचे वात्रा द्वीयावा दे *शेवःमदेःहेवःदवुदःक्रश्रावे केंशान्ववःयः नहेवःवशःदवुदः नः धेवः पदः* क्रिंशकार्ने नेते कु क्रेत्र भेत्र में विभागशुर्याय दे हिरान्ता ने निवित सर्गेद में मु क्रून ग्रीम ग्रामा केंग हिन हे मानु न पदि । पदि वी पी हो न र्श्वम्यायने न्वानी वर्ष्ट्रयासासाधित यान्या क्रेन् होन वावताया हे याया श्रेन्यः है। वेशः मश्रुत्रायः न्ता मव्दः धरः हः यः वेशः स्यः धरा स्रः चब्रेन् कु: ५८: क्रेन् ५५ वा व्याप्त वा विद्युद्रः च: देवा श्राः श्राः श्रेन् विद्यः ५८ । षराने हिनायमा रदाविवानगावी वर्षमा भेवानदा। । गाववाया हिमाया बेद'राधेवा।

श्चेरावहेगाहेत् श्चे।वस्रावहेरादुराश्चाळे लेंगा लेंगा लेंगा वर्गेगा ननेवार्श्वरावेदाधेवाधेवाधे केंद्रायाय देता केंद्रायाय देवे वाले कार्दे या विकास ग्राट्येत्रः अत्ररः गृतुग्रायः ने 'तर्यः न'त्रे दे सामेट्र स्वेर सेस्या द्वायः यस-न्यानी कें राहिन इसरायायमें या मदी निर्मा ने राम देश मासून वन्नार्थायान्यायान्यार्थात्रात्रात्रात्र्या । देरावहेवः ईन्यायदेशः য়ৢ৴ॱइंस'ग्रीः क्रेंन्'मः बेट के 'प्रिंग प्रेन् पायेषा भ्रीः नः स्रंग्रीः नटः यथः वज्ञर्थार्थेन्यार्थेन् सेन् ग्री हेन्या द्वार्यात्रायात्र वित्राः गहन्त्रभारेट् से पर्म द्येराम हि लिटाट्ट म्याया क्या इसया क्रिंट्य मळें अःश्रें नाः कना अः अः पर्दे दः माना देः पान दः माळें अः देः द्वाः पार्टे दः द्वाः इस्र नेश ग्री हेत पेंद्र प्रमा श्रीमा कवारा पेत्र प्रेसे हीमा वेश हेंद्र पा ग्री हेत्रविवार्धेर्भार्वेत्राया वरेष्ट्रवाह्मरार्देर्भवात्रायीय्र्वात्रायीय्र ने नशर्धन से नर्गेश दें न नर ने ना धेर तस ने न वहेग हेर धेरश च्यायाता भ्री विटायमेया यद्येया द्येता स्वेता स्विता क्रिया स्वेता स्वेता स्वेता स्वेता स्वेता स्वेता स्वेता स्व यःविगाधिवावःश्रींगाळग्राये ग्रायायश्रायः धिव। दे नविवः ध्रायायायान्या वःभेगायाद्वानाद्वान्याद्वानायाभेगाठेशावर्वेदायाभेगशास्त्रेत्रावान्यसूदा नन्ग्रायायान्यायान्यायान्यायात्र्यायात्र्यायात्र्यायायायात्र्यायायायात्र्यायायायायायायायायायायायायायायायायाया वाध्याने निहेश ग्रीश पर्देन भवे श्रीना इनाहेश देव निहेश हैं नि स्थित

मर्थार्ट्रेन या प्रमाया ना ना ना प्यान से ना में स्थान से ना है या र्देवःग्रेगः हुः हुरः भेदः यथः भेगः द्रेशः ग्रवशः यः देः शुः विगः गेः द्रयदः द्रः व्यथःवयःवर्हेगःन्वेयःययः श्रुयःयःवे न्वः नवः श्रेनः सेन। ने वे स्टःस्टः मी भूतका ग्री पहेंचा द्धंया नाराधेदासा दे हिता के कि के कि स्वार्थ के कि साम के कि साम के कि साम के कि साम के कि स र्रेशायहेत्रकुःषश्राधाः सराप्राप्तासराया गर्डे र्वेरायहेत्राययसायरात्रा रेग्राययायायहेदाद्यानदेदाहुदाग्ची वर्गार्केदाद्यायटा गुःशे व्राया धेव। दमेर्न्स्वर्वे उनार्के अछिद्रद्वा मेश्वर्द्द्रम्यदे सेवा दे सेवा संधिद हे ग्रुग्रागुः भ्रुः अळे दः अर्वेदः यदे ग्रुः यः के ग्रेदः यदे ग्रुदः वेकः यः देः यः देवः र्रेदे न्यार बना ने त्य हें अ हे हिन हों ना धर न्या य विवा न भूना अ या स्था ने हर यान्त्रित्नेत्रम्यायाः अत्या द्ध्यायायाः नेत्रावर्षायाः सर्वे स्ट्रिस्य शुः सर्द्ध्दयः सः श्रें यः हे विवा नर्वे या ने यः देश दः हिन् रच्या वीया ने यः यक्ष्या न्रेस्यायान्त्रिन्नेन्न्त्र्याक्ष्याक्ष्याक्ष्यान्यान्या ८८। लट्र क्या नायनवाली वा लीवा स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान यट्यस्त्रियासी स्ट्रियाया स्ट्रियायायास्त्रस्यायागुत्रातुरस्यास्यास्त्रस्या नहेन च सूर्या नहेन नगरें न त्या द्याया दर्षे प्रसेर से वा सरें न की हसा चर्या में 'इस चर्या स्वयः प्रयाप विषा निष्ठ में स्वरः निर्मा व स्वरः

नशः र्सेन्यः सः नययः नवे सुन्। । सर्गे वः में यः सेनः वे नान्यायः सरः सर्दि। विशासायदी क्षेत्रामात्रस्या प्राप्त सुद्राने देवा माराविमा त्या देशेता मदे र्चिना सर देवे से दादसा मासूदाया दुन्य दुन्य हो दा है । कु के प्राप्त से विकास स नवी क्षेत्राची प्रवर्तन वाया नहेन नशा दिन ही नशा में क्षेत्र नरहा। वेश यदे अव र मा परेदे सेव बर विमा से द पर्मा श्रुमा द वे पर्मे मा महेव हैं र हेन्:क्षुन:सदे:ग्रान्य:य:नर्हेय:बेस्य:ग्री:सर:यर्द्य:य:ग्रान्न:सदे:ग्रान्य: क्रम्भामाञ्चाधीः विषाः भिरायदे विः सरावीः क्वें दिसायक्रमार्कें दार्वमा वीः हवायाः नर्याद्वितः वयापा निर्याने वी । अया व्यापा देवा ना अवार्यान्य । अवार्यान्य । अवार्यान्य । अवार्यान्य । अवार्य न्नाः कुरःन्, नश्चेर्यः ने श्वरः नः श्चेन् सेंदेः रदः तयः हेन् सेंद्यः ग्रवः ग्रदेः द्ध्यः र् स्यानः धेरास्यास्यान्यान्यं नावान्यान्यं साध्यान्यं साध्यान्यं साध्यान्यः सकेंगानी वराधरमा श्रुवामा ग्री प्रीया विक्रिंग सेंप्रमा सुर्ग में मार्थि । सक्रिन्यानु पर्वे निवे ने निवान किता में किता में प्रताम मान्या केता र्सेवे मुश्रुद्राय बुद्राब द्वा देव दिस्य अया मृत्य देव द्वा दिसे अब्रुव प्रवे हेशःनन्दः हे विवानग्रीशः यः त्रस्या उदः स्दः हेदः विविदे विवः विवाय विवाय র্ব্রিলাঝানম্ভার্ নের্বাঝানন্ত্র অন্মান্ত্র আরু সাম্বার্থ নির্বা न्नो पन्त नर्द्धन पा इसस्य भी सुन स्र र्स्ट्स नस्य स्था भी स्रेना सुन न र स्था त्-भे-पळन-भ्रेट-दश-पर्मेट्-प-प्ट-प्चरश-हे-ख्र-स्वाश-मे-भ्रेन्दश-

दर्गेग'नदेव'ग्री'र्भेर।

नभ्वार्थास्य नेत्रायेत्। यदेरायनदात्त्रसादगारादवी नवे कासकेरात्। हेत्रत्रवेयानक्ष्र्रायायका हेत्रत्रात्व्यूरानाने हेत्राव्यायहरा म । श्रुनःमदेःस्रुन्यन्यन्यः भ्रुःनः त्रम्यः उत् न् । स्रुकः नृतः भ्रुनः ग्रुनः न् नृतः वयायहेवायाय। भिर्यक्षात्रयात्राह्मेरायायायायायायायायायायायाया यहूर्म्यरेय.ज्यायायायया भितास्याः सूर्यःत्रायास्यः प्रीत्रायः स्थान्त्रायः कैंशपदेव मधे क्वेंदायम दरपद्शपमा । गशुरम मुर्म रामे हारे से दे नश्रमश्रामा दे। । गुन्न ग्रम् स्वाम् स्वाम् श्रम् । स्वाम् । स्वाम् । स्वाम् । स्वाम् । स्वाम् । स्वाम् । स्वाम र्श्वेर्प्तह्रमात्वया हेरश्चेर्प्त्रयायावयाम्यान्यान्या । पर्शेष्ट्राच्येर्प्यावया शुराय। दि:श्रेदायद्याक्षाय्यास्य शुरावया। विशेषायदे स्वाप्यस्य सेवायर र्विणा डेशःश्रेष्यश्चराः विशः श्रेंद्रायशः श्रेशः सम्वयः वश्चरे हे : भ्रवशः वनः श्रेः यशःमिवे:लूटशःश्रःमीयःसशःरेम्। ।।

वर्गेना नदेव शे र्भेना

ब्रान्स्वर्तेव्हेत् केव्यासे स्त्री स्त्रुव्य केव्या । दे से द्रान्ते प्रस्त केव्या के स्त्रुव्य केव्या स्त्रुव्य । प्रस्त्र स्त्रुव्य केव्या केव्या केव्या केव्या स्त्रुव्य । व्या स्त्रुव्य केव्या केव्

दब्रुवानेन मुन्न प्रदेश । विकास के स्वार के स्व